Dr. Ambedkar International Centre
Ministry of Social Justice and Empowerment
15 Janpath, New Delhi 110001

Call for Papers

Name of Journal: ***Samajik Nyāya Sandesh***

Issue: **January–March 2026**, Year: **22**, Issue: **01**

Theme of the Issue: **DE-NOTIFIED, NOMADIC, AND SEMI-NOMADIC TRIBES (DNTs)**

Scholars, researchers, and practitioners are cordially invited to contribute to this special issue and enrich academic discourse on DE-NOTIFIED, NOMADIC, AND SEMI-NOMADIC TRIBES (DNTs).

About the Journal: For over two decades, *Samajik Nyāya Sandesh*, a peer-reviewed interdisciplinary academic journal has served as a scholarly platform for rigorous research, critical inquiry, and reflective engagement with intellectual, cultural, philosophical, and social traditions. *Samajik Nyāya Sandesh* has been published by Dr. Ambedkar International Centre (DAIC), a think tank and centre of excellence dedicated to research, academic engagement, policy-oriented studies, and knowledge dissemination seeks to promote rigorous scholarship, interdisciplinary research, and informed dialogue through publications, conferences, lectures, and collaborative academic initiatives under the aegis of Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India.

About the Dr. Ambedkar International Centre (DAIC): Dr. Ambedkar International Centre (DAIC) has emerged as a world-class think tank and a leading hub for policy dialogue on social, economic, constitutional, and global issues. It is among the rare institutions where academic excellence, cultural engagement, government dialogue, and public participation coexist in a meaningful and balanced manner. The intellectual heart of DAIC is its rich and diverse library, which houses more than 8,497 books, constitutions of nearly 100 countries, 238 Braille books, and rare collections on political thought, Indian languages, Pāli and Buddhist studies, economics, sociology, public administration, and other disciplines. Through its association with DELNET and global e-library services, DAIC provides free access to millions of e-books, journals, and research materials. Under the leadership and guidance of Shri Akash Patil, the quality, reach, and social impact of activities have grown significantly, strengthening the intellectual foundations of nation-building. As India moves towards the goal of "Viksit Bharat 2047", material growth alone is not sufficient. The journey requires intellectual strength, civic awareness, ethical values, and social justice. The Dr. Ambedkar International Centre stand as a vital pillar of this national journey, shaping the future through ideas.

About the Special Issue: De-Notified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes (DNTs) remain among the most marginalised communities in India due to historical criminalisation, social stigma, economic deprivation and administrative exclusion. Despite de-notification, they continue to face poverty, homelessness, lack of identity documents, denial of welfare benefits, police profiling and limited access to education and healthcare. This special issue aligns with the mission and vision of Dr. Ambedkar International Centre (DAIC) to advance social justice, equality, human dignity and constitutional values inspired by Dr. B.R. Ambedkar. It also supports the Ministry of Social Justice and Empowerment (MoSJE) initiatives including SEED, the Development and Welfare Board for DNTs, National Action Plan, scholarships, skill development, housing, health and livelihood schemes.

Suggested Areas (Indicative, Not Exhaustive):

- History of criminalisation and de-notification
- Identity, citizenship and access to welfare
- Education, health and livelihood challenges
- Women, children and vulnerable groups
- Law, policing and human rights
- Policy evaluation and implementation
- Culture, heritage and community knowledge
- Social movements and leadership

Languages Accepted: Hindi, and English

Important Dates

- **Last date for submission: 26 January 2026**
- **Notification of review outcome:** Second week of February 2026
- **Publication: 31 March 2026** (January–March 2026 Issue)

Submission Email: snsdaic123@gmail.com (Subject line: *CFP – De-Notified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes (DNTs)*

Submission Guidelines

- **Word limit:** 5,000–8,000 words (including notes, excluding references), **Abstract:** 250–300 words, **Keywords:** 4–6, **Font:** Times New Roman, **Font Size:** 12 pt, **Line spacing:** 1.5, **File format:** MS Word (.doc / .docx), **Author details:** Name, affiliation, ORCID (if available), brief bio (50–75 words).
- Submitted papers must be directly and substantively relevant to the theme **De-Notified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes (DNTs)** Manuscripts should demonstrate:
  - Clear engagement with **De-Notified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes (DNTs)**
  - Use of **authentic sources and scholarly references**
  - Conceptual coherence and originality
  - Alignment with the thematic focus of the special issue. Purely descriptive, journalistic, or non-academic submissions will not be considered.
- **Referencing and Citation Styles:** Authors must strictly follow one referencing style only throughout the manuscript. Mixing styles is not permitted. The journal accepts the latest editions of the following formats: APA (American Psychological Association)/ MLA (Modern Language Association).
- **In-Text Citation (as applicable):** APA: (Author, Year, p. xx)/ MLA: (Author Page). All submissions will undergo a double-blind peer review process.
- The Editorial Board reserves the right to accept, request revisions, or reject manuscripts.

* **For further assistance or queries, please contact us at** snsdaic123@gmail.com **or call:** 011-23477505.

डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केन्द्र
सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय
15, जनपथ, नई दिल्ली – 110001

शोध-पत्र आमंत्रण

पत्रिका का नाम: *सामाजिक न्याय संदेश*, अंक: जनवरी–मार्च 2026, वर्ष: 22, अंक: 01

विशेषांक का विषय: विमुक्त, घुमंतू और अर्द्ध-घुमंतू जनजातियाँ (DNTs)

विद्वानों, शोधार्थियों एवं विमुक्त, घुमंतू और अर्द्ध-घुमंतू जनजातियाँ से जुड़े विशेषज्ञों को सादर आमंत्रित किया जाता है कि इस विशेषांक हेतु अपने शोध-पत्र प्रस्तुत कर विमुक्त, घुमंतू और अर्द्ध-घुमंतू जनजातियाँ (DNTs)पर होने वाले अकादमिक विमर्श को समृद्ध करें।

पत्रिका के विषय में: पिछले दो दशकों से अधिक समय से *सामाजिक न्याय संदेश* एक समकक्ष-समीक्षित, अंतर्विषयी अकादमिक पत्रिका के रूप में गंभीर शोध, आलोचनात्मक अन्वेषण तथा बौद्धिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं सामाजिक परम्पराओं पर विचारपूर्ण संवाद का सशक्त मंच रही है। यह पत्रिका डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केन्द्र (DAIC) द्वारा प्रकाशित की जाती है। DAIC एक विचार-कोष (थिंक टैंक) तथा उत्कृष्टता का केन्द्र है, जो सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के संरक्षण में शोध, शैक्षणिक संवाद, नीति-उन्मुख अध्ययन तथा ज्ञान-प्रसार के लिए समर्पित है। केन्द्र का उद्देश्य प्रकाशनों, संगोष्ठियों, व्याख्यानों एवं सहयोगात्मक शैक्षणिक पहलों के माध्यम से सुदृढ़ विद्वत्ता, अंतर्विषयी शोध तथा सूचित संवाद को प्रोत्साहित करना है।

डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केन्द्र (DAIC) के विषय में
डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केन्द्र (DAIC) एक विश्वस्तरीय विचार-कोष के रूप में तथा सामाजिक, आर्थिक, संवैधानिक और वैश्विक विषयों पर नीति-संवाद के अग्रणी केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। यह उन विरल संस्थानों में से एक है जहाँ शैक्षणिक उत्कृष्टता, सांस्कृतिक सहभागिता, शासकीय संवाद और जन-सहभागिता का संतुलित एवं सार्थक समन्वय दृष्टिगोचर होता है। DAIC का बौद्धिक केन्द्र उसका समृद्ध एवं विविध पुस्तकालय है, जिसमें 8,497 से अधिक पुस्तकें, लगभग 100 देशों के संविधान, 238 ब्रेल पुस्तकें तथा राजनीतिक चिन्तन, भारतीय भाषाएँ, पाली एवं बौद्ध अध्ययन, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, लोक-प्रशासन एवं अन्य विषयों से संबंधित दुर्लभ संग्रह उपलब्ध हैं। DELNET तथा वैश्विक ई-पुस्तकालय सेवाओं से संबद्धता के माध्यम से DAIC लाखों ई-पुस्तकों, शोध-पत्रिकाओं एवं अनुसंधान सामग्रियों तक निःशुल्क पहुँच प्रदान करता है। श्री आकाश पाटील के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में केन्द्र की गतिविधियों की गुणवत्ता, व्यापकता तथा सामाजिक प्रभाव में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे राष्ट्र-निर्माण की बौद्धिक आधारशिला और अधिक सुदृढ़ हुई है। "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की ओर अग्रसर भारत के लिए केवल भौतिक प्रगति पर्याप्त नहीं है बल्कि इस यात्रा के लिए बौद्धिक सामर्थ्य, नागरिक चेतना, नैतिक मूल्य तथा सामाजिक न्याय अनिवार्य हैं। डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केन्द्र इस राष्ट्रीय यात्रा का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है, जो विचारों के माध्यम से भविष्य का निर्माण कर रहा है।

विशेषांक के विषय में: विमुक्त, घुमंतू एवं अर्द्ध-घुमंतू जनजातियाँ (DNTs) भारत की सर्वाधिक वंचित सामाजिक श्रेणियों में सम्मिलित हैं। औपनिवेशिक कालीन अपराधीकरण, सामाजिक कलंक, आर्थिक अभाव तथा प्रशासनिक बहिष्करण के कारण ये समुदाय आज भी निर्धनता, आवासहीनता, पहचान-पत्रों के अभाव, कल्याणकारी योजनाओं से वंचना, पुलिस द्वारा लक्षित निगरानी तथा शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच जैसी गंभीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं। यह विशेषांक डॉ. आंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र (DAIC) के सामाजिक न्याय, समता, मानवीय गरिमा एवं संवैधानिक मूल्यों पर आधारित ध्येय एवं दृष्टि से प्रेरित है। साथ ही यह सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय (MoSJE) की SEED योजना, विमुक्त जनजाति विकास एवं कल्याण बोर्ड, राष्ट्रीय कार्ययोजना, छात्रवृत्ति, कौशल विकास, आवास, स्वास्थ्य एवं आजीविका योजनाओं के उद्देश्यों का समर्थन करता है।

संभावित विषय-क्षेत्र (संकेतात्मक, सीमित नहीं)

- ❖ अपराधीकरण एवं विमुक्ति का इतिहास
- ❖ पहचान, नागरिकता एवं कल्याणकारी योजनाओं तक पहुँच
- ❖ शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आजीविका से जुड़ी चुनौतियाँ
- ❖ महिलाएँ, बालक-बालिकाएँ एवं संवेदनशील वर्ग
- ❖ विधि, पुलिस व्यवस्था एवं मानवाधिकार
- ❖ नीतियों का मूल्यांकन एवं क्रियान्वयन
- ❖ संस्कृति, विरासत एवं सामुदायिक ज्ञान
- ❖ सामाजिक आंदोलन एवं नेतृत्व

स्वीकृत भाषाएँ: हिंदी एवं अंग्रेज़ी

महत्वपूर्ण तिथियाँ

- शोध-पत्र प्रेषण की अंतिम तिथि: **26 जनवरी 2026**
- समीक्षात्मक निर्णय की सूचना: **फरवरी 2026 का प्रथम सप्ताह**
- प्रकाशन: **31 मार्च 2026 (जनवरी–मार्च 2026 अंक)**

प्रेषण ई-मेल:

snsdaic123@gmail.com ***(विषय पंक्ति:*** विमुक्त, घुमंतू एवं अर्द्ध-घुमंतू जनजातियाँ (DNTs)***)***

प्रेषण दिशा-निर्देश:

- **शब्द-सीमा:** 5,000–8,000 शब्द (टिप्पणियाँ सम्मिलित, संदर्भ सूची अपवर्जित), **सारांश** (Abstract):250–300 शब्द, **प्रमुख शब्द** (Keywords):4–6, **फ़ॉन्ट:** Unicode Font (Mangal)/ Kruti Dev 010, **फ़ॉन्ट आकार**: 12, **बिंदुपंक्ति-अंतराल:** 1.5, **फ़ाइल प्रारूप:** MSWord (.doc/.docx), **लेखक विवरण:** नाम, संस्थागत संबद्धता, ORCID (यदि उपलब्ध हो), संक्षिप्त परिचय (50–75 शब्द)
- प्रस्तुत शोध-पत्र विमुक्त, घुमंतू एवं अर्द्ध-घुमंतू जनजातियाँ (DNTs) विषय से प्रत्यक्ष एवं सारगर्भित रूप से संबद्ध होने चाहिए। पाण्डुलिपियों में निम्नलिखित तत्व स्पष्ट रूप से परिलक्षित होने चाहिए—
  - ➢ विमुक्त, घुमंतू एवं अर्द्ध-घुमंतू जनजातियाँ (DNTs) के साथ स्पष्ट बौद्धिक संलग्नता
  - ➢ प्रामाणिक स्रोतों एवं विद्वतापूर्ण संदर्भों का उपयोग
  - ➢ संकल्पनात्मक सुसंगति एवं मौलिकता
  - ➢ विशेषांक के विषयक केन्द्र के साथ स्पष्ट सामंजस्य। केवल वर्णनात्मक, पत्रकारिता-प्रधान अथवा अकादमिक मानकों से रहित प्रस्तुतियाँ विचारार्थ स्वीकार नहीं की जाएँगी।
- **संदर्भ एवं उद्धरण शैली:** लेखकों को सम्पूर्ण पाण्डुलिपि में केवल एक ही संदर्भ शैली का कठोरता से पालन करना होगा। विभिन्न शैलियों का मिश्रण अनुमन्य नहीं है। पत्रिका निम्नलिखित शैलियों के नवीनतम संस्करण स्वीकार करती है—**APA** (American Psychological Association) / **MLA** (Modern Language Association)।
- **पाठ-आंतरिक उद्धरण (यथानुसार): APA:** (लेखक, वर्ष, पृ. xx)/ **MLA:** (लेखक पृष्ठ)।
- सभी प्रस्तुतियाँ समीक्षा प्रक्रिया से होकर गुजरेंगी। संपादकीय मंडल को शोध-पत्र स्वीकार करने, संशोधन हेतु लौटाने अथवा अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार सुरक्षित है।

* **अधिक जानकारी अथवा किसी भी प्रकार की सहायता के लिए कृपया** snsdaic123@gmail.com **पर संपर्क करें या** 011-23477505 **पर दूरभाष करें।**